



Agri institute honours farmers

HT Correspondent

■ chdnewsdesk@hindustantimes.com

KARNAL: Fifteen "progressive" farmers were honoured on Tuesday at the Kharif Kisan Mela, organised on the Central Soil Salinity Research Institute (CSSRI) campus here. Eminent agriculture scientists and farmers of the region took part in the mela.

A special interactive session and exhibitions were also organised for the benefit of farming community. In the interactive session, experts shared their views on the emerging agriculture trends and gave their opin-

ions on the problems faced by the farmers.

The farmers were also informed about the technologies developed at the CSSRI for reclamation of salt affected soils, use of poor quality irrigation water, crop diversification, medicinal and aromatic plants and salt tolerant varieties.

Samples of soil and water, brought by the farmers, were tested free-of-cost by the experts.

Speaking on the occasion, CSSRI Director Dr Gurbachan Singh said that nearly 1.7 million hectare land of saline soil had been reclaimed in the states

About 10 million tonne of foodgrain was being producing annually from the reclaimed soils,"

GURBACHAN SINGH
Director, CSSRI

of Punjab, Haryana and Uttar Pradesh by the efforts of the institute scientists. "About 10 million tonne of food grains was being producing annually from the reclaimed soils," he added.

Dr Singh also elaborated on

the recent initiatives taken by the institute, particularly in the field of multiple use of water for multi-enterprise agriculture, resource conservation technologies such as zero tillage, bed planting, groundwater recharge, energy plantations for biosaline agriculture like jatropha and pongamia and medicinal plants in salt-affected soils of India.

In his speech, Punjab State Farmers' Commission Chairman G.S. Kalkat urged the farmers to adopt integrated farming model and said it was viable technology keeping in view the declining water table and small land holdings of the farmers.

बरसात से ठीक होगा खारा पानी

रिचार्ज प्रोजेक्ट बरसात में जलभराव से फसल खराब होने की समस्या से भी देगा निजात।

रमेश पाल | करनाल

तेज बरसात में जलभराव से अब फसलें नहीं मरेंगी, साथ ही यही बरसाती पानी भू जल स्तर बढ़ाने के साथ-साथ खारे पानी को भी सुधारेगा। वैज्ञानिकों ने ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम से बरसाती पानी के सदुपयोग व लाभ के परिणाम हासिल किए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार हरियाणा में 60 प्रतिशत नमकीन पानी है।

केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, निदेशक डा. गुरबचनसिंह के नेतृत्व में लगातार लवणीय व क्षारीय भूमि के सुधार और उसमें अधिक पैदावार के लिए शोध कार्यों में जुटे हैं।

गिरते भूजल के बीच पानी की किल्लत और लगातार तेज बारिश के कारण किसानों की फसलें नष्ट हो जाती हैं। इसलिए विज्ञानिकों ने दोनों समस्याओं के समाधान के अलावा भूमि के अंदर खारे पानी की क्वालिटी में सुधार के लिए ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम तकनीक को विकसित किया है।

ऐसा है सिस्टम

30 से 40

हजार आता है खर्च

18

इंची बोर 100 से 150 फुट गहरा

ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम से नीची जमीन पर जमा पानी जमीन में ही समा जाता है।

जल मंत्रालय भारत सरकार की ओर से किसानों की डिमांड पर जरूरत के स्थानों पर ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम लगाने की योजना चल रही है।

अब तक करनाल में 20, कैथल में 6, जींद में 4, यमुनानगर में दो रिचार्ज सिस्टम लगाए जा चुके हैं। सिंचाई एवं जल निकास अभियांत्रिकी प्रभाग, सीएसएसआरआई करनाल के अध्यक्ष डा. एसके कामरा ने बताया कि ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम के एक साथ तीन लाभ हैं। रिचार्ज सिस्टम से जहां जलभराव की समस्या खत्म होने से फसल की सुरक्षा होती है, वहीं भूजल स्तर भी ऊपर आता है।

प्रति वर्ष खिसक रहा है दो फीट पानी

प्रदेश में पिछले 40 सालों से प्रतिवर्ष एक से दो फीट नीचे पानी खिसक रहा है। पानीपत में जहां भूजल स्तर 48 फीट पर पहुंच गया है, वहीं महेंद्रगढ़ जिले में 130 फीट की गहराई पर वाटर लेवल आ गया है। करनाल में 50 फीट, कुरुक्षेत्र में 90 फीट, कैथल में 60 गडगांव में 70

अमर उजाला नई दिल्ली, बुधवार, 21 अक्टूबर, 2009

हरियाणा

प्रदर्शनी



करनाल में मंगलवार को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में आयोजित खरीफ किसान मेले के अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते (पंजाब) अध्यक्ष किसान आयोग डा.जीएस कालकट ।

Scientists urged to improve yield

BHANU P. LOHUMI

TRIBUNE NEWS SERVICE

KARNAL, OCTOBER 22

The chairman of the Punjab Farmers Commission, Dr GS Kalkat has urged farm scientists to work towards breaking the yield barrier so as to meet the food grain demand of the growing population.

Inaugurating the "Kharif Mela", organised by the Central Soil Salinity Research Institute (CSSRI), here, he emphasised the need for securing the national food basket and urged the farmers to adopt laser-level-

er, happy seeder and artificial insemination

of buffaloes. He also advised the farmers to adopt integrated farming model and diversify to vegetable cultivation and commercial dairy farming for supplementing their income, besides developing varieties suitable for water-stress situation.

Dr Gurbachan Singh, director, CSSRI, said about 1.7 million hectare land had been reclaimed by the institute in Punjab, Haryana and Uttar Pradesh and over 10 million tonne of food grain was being produced annually from reclaimed soils. He also elab-

orated upon the recent initiatives taken by the institute.

Farmers were informed about the technologies developed at the CSSRI for reclamation of salt-affected soils, use of poor quality irrigation water, crop diversification, medicinal and aromatic plants, salt tolerant varieties etc. Seeds of wheat PBW 550, PBW 502, DBW 17, HD 2894, HD 2851, HD 2733, KRL 19 and mustard CS 52, CS 54 and CS 56 were sold during the mela. Soil and water samples brought by farmers were tested free of cost and a large number of farmers benefited from the mela.

Kharif Mela

All ICAR institutes

located in Karnal, departments of agriculture, HAU, Regional Station, Karnal, and other government and private agencies displayed their works at the exhibition. A "kisan goshthi" and field visits were also organised in which scientists interacted with the farmers and discussed and solved their emerging agricultural related problems. Besides, 15 progressive farmers from Haryana were felicitated during the fair and prizes were awarded to three best exhibition stalls.

हरिभूमि

हरियाणा-भूमि

रोहतक

बुधवार, 21 अक्टूबर 2009
कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया 2066

चंडीगढ़



करनाल। केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में आयोजित खरीफ किसान मेले का उद्घाटन करते पंजाब किसान आयोग के अध्यक्ष डा. जीएस कोलकट।

वैज्ञानिक पद्धति अपना उत्पादन बढ़ाएं किसान

जानकारी

केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान
ने लगाया किसान मेला

हरिभूमि न्यूज

करनाल। केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में खरीफ किसान मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन पंजाब किसान आयोग के अध्यक्ष डा. जीएस कालकट ने किया, जबकि विशिष्ट अतिथि के तौर पर गेहूँ अनुसंधान निदेशालय करनाल के परियोजना निदेशक डा. एसएस सिंह ने शिरकत की। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों, प्रदेश के कृषि विभागों, करनाल स्थित क्षेत्रीय केंद्र उचानी व अन्य सरकारी संस्थाओं ने अपनी-अपनी कृषि संबंधी प्रदर्शनियों के अलावा सहकारी, गैर सरकारी, प्राइवेट तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा बीज, खाद, दवाईयां, कृषि संयंत्र, ट्रैक्टर आदि के कुल 50 स्टाल लगाए। किसान मेले के दौरान किसानों के लिए संस्थान के फार्म पर चल रहे अनुसंधान प्रयोगों के भ्रमण के साथ-साथ एक किसान गोष्ठी भी आयोजित की गई, जिसमें

वैज्ञानिक व विषय विशेषज्ञों द्वारा किसानों की कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान बताया गया। इस तकनीक, फसल विविधीकरण, बहु उद्देश्यीय खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं जीरो टिलेज तकनीक द्वारा खेती, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती व बायोडीजल प्लांट्स जटरोफा की खेती आदि की जानकारी दी गई। इसके साथ-साथ किसानों द्वारा उनके खेत व टयूबवैल से लाए गए मिट्टी एवं पानी के नमूनों की निशुल्क जांच की गई। संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने कहा कि संस्थान द्वारा लवणग्रस्त भूमि के सुधार एवं निम्नगुणवत्ता वाले पानी का उपयोग करके अच्छी उपज लेने के लिए संवर्धन अभ्यास किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इस संस्थान द्वारा देश की कुल 6.73 मिलियन हैक्टेयर लवणग्रस्त मृदाओं में से संस्थान द्वारा पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश की लगभग 1.5 मिलियन हैक्टेयर लवणग्रस्त भूमियों को सुधारा जा चुका है। इन भूमियों के सुधार से देश में प्रतिवर्ष लगभग 8-10 मिलियन टन, अतिरिक्त वार्षिक अनाज का उत्पादन हो रहा है।

करनाल केसर

WEDNESDAY

पंजाब केसरी बुधवार 21 अक्टूबर, 2009

खरीफ किसान मेले का उद्घाटन पर वैज्ञानिकों का आह्वान

घटते भू जल स्तर को बचाने पर दिया बल

वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, किसान और मशीन निर्माता मिलकर निकालेंगे समस्या का समाधान



किसान मेले में गेहूँ की किस्मों को देखते किसान व केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में आयोजित खरीफ किसान मेले का शुभारंभ करते अतिथि। (वेवेव)

करनाल, 20 अक्टूबर (हरिश) : देश की कुल 6.73 मिलियन हेक्टेयर लवणग्रस्त भूमि में से पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश की लगभग 1.5 मिलियन हेक्टेयर लवणग्रस्त भूमि को सुधारा जा चुका है। इस सुधार के बाद प्रतिवर्ष लगभग 8 से 10 मिलियन टन अतिरिक्त वार्षिक अनाज का उत्पादन हो रहा है। इस बात का खुलासा आज केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने यहां आयोजित खरीफ किसान मेले के दौरान किया।

इस मेले का उद्घाटन पंजाब प्रदेश किसान आयोग के अध्यक्ष डा. जी.एस. कालकट ने किया। उन्होंने किसानों से कहा कि वह वैज्ञानिक तकनीक से खेती करें और खेती में रासायनिक की बजाय जैविक खाद का प्रयोग करने के साथ-साथ जीरो टिलेज तकनीक और कम पानी की मांग वाली दलहनी फसलों पर खेती करें ताकि घटते भू जल स्तर को किसी तरह बचाया जा सके। उन्होंने कृषि उत्पादकों की गुणवत्ता में वृद्धि करके उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने पर बल देते हुए कहा कि माडल खेती छोटे और सीमांत किसानों के लिए अच्छी तकनीक है। भारत आज भी प्रमुख फसलों के

उत्पादन में विश्व स्तर पर प्रथम स्थान पर है मगर प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के हिसाब से हम अभी नीचे हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकारों ने भी कृषि को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं लागू की लेकिन अब हमारे वैज्ञानिकों और किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि दिनों-दिन बढ़ रही प्रति हेक्टेयर लागत को कैसे कम करके पैदावार को बढ़ाया जाए ताकि किसानों की आमदनी बढ़ सके। इस दौरान गेहूँ निदेशालय के निदेशक डा. एस.एस. सिंह ने बताया कि हरित क्रांति के

बाद फसलों का उत्पादन स्थिर हो गया और खर्च बढ़ता जा रहा है लेकिन अब समय आ गया है कि कम पानी की मांग वाली और मिश्रित खेती अपनाई जाए। इससे पहले संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने बताया कि विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, किसान और मशीन निर्माता एक साथ मिलकर किसानों की समस्या का समाधान तलाशेंगे। उन्होंने बताया कि गेहूँ और धान से किसानों को 6 महीने बाद पैसा मिलता है जबकि मधुमक्खी, पशुपालन, मुर्गी, बतख, मछली पालन, फलों, फूलों और सब्जियों की खेती से किसानों को रोजाना आमदनी होती है और किसान

के परिवार को घर में ही रोजगार मिलता रहता है। इसलिए बहुउद्देश्यीय खेती करके भू जल स्तर को गिरने से बचाया जा सकता है।

खरीफ किसान मेले में आज बीज, खाद, दवाइयां, कृषि संयंत्रों समेत करीब 50 स्टाल

लगाए गए। इस अवसर पर डा. एस.के. कामरा, प्रधान वैज्ञानिक रामशंकर त्रिपाठी, जनसम्पर्क अधिकारी एस.के. शर्मा समेत कई अन्य संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारियों के साथ भारी संख्या में किसान मौजूद थे।

चुनौती

□ 1.5 मिलियन हेक्टेयर लवणग्रस्त भूमि में सुधार होने से 10 मिलियन टन अतिरिक्त हो रहा है उत्पादन



खरीफ किसान मेले के दौरान वैज्ञानिक तकनीक को समझाते कृषि वैज्ञानिक। (वेवेव)

हरित क्रांति के बाद उत्पादन स्थिर

- केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में खरीफ किसान मेला
- पंजाब किसान आयोग के अध्यक्ष ने दी वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की सलाह

करनाल, जागरण संवाद केंद्र : पंजाब के किसान आयोग के अध्यक्ष डा. जीएस कालकट ने कहा कि कुछ समय पहले गेहूँ, सरसों, गन्ने आदि फसल की पैदावार काफी अधिक होती थी, लेकिन आज 50 प्रतिशत पानी अच्छा नहीं होने व गिरते भूजल के कारण उत्पादन में गिरावट आती जा रही है। उन्होंने किसानों से वैज्ञानिक तरीकों से खेती करने, खेतों में रसायनिक खादों की बजाय जैविक खाद व कम पानी वाली फसलों को उगाने की अपील की।

डा. जीएस कालकट केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में आयोजित खरीफ किसान मेले में वैज्ञानिकों व किसानों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि किसान कम पानी वाली फसलों व जीरो टोलेंज तकनीक से खेती करें तो काफी हद तक पानी को बचाया जा सकता है। उन्होंने सीमांत व छोटे किसानों से माडल खेती अपनाकर अधिक लाभ कमाने का आह्वान किया। गेहूँ निदेशालय



करनाल में सीएसएसआरआई में किसान मेले में गेहूँ की प्रजातियों को देखते किसान।

के परियोजना निदेशक डा. एसएस सिंह ने कृषि को किसानों के लिए रोजगारपरक व जीवित आधार बताया। उन्होंने कहा कि हरित क्रांति के बाद फसलों का उत्पादन स्थिर हो गया है, जबकि खर्चा बढ़ता जा रहा है। अब समय आ गया है कि किसान मिश्रित खेती व कम पानी वाली जैसे दलहन फसलें उगाएं। संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने किसानों से गेहूँ व धान

की फसलों के अलावा मधु मक्खी पालन, पशु पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन के अलावा सब्जी, फल व फूलों की खेती करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि गिरते हुए भूजल स्तर को बचाना है तो किसानों को कम पानी वाली फसलों को उगाना होगा। उन्होंने किसानों से वैज्ञानिक तरीके अपनाने और जीरो टोलेंज का प्रयोग करने की भी सलाह दी। मेले में



किसान मेले का उद्घाटन करते मुख्यातिथि पंजाब के किसान आयोग के अध्यक्ष डा. जीएस कालकट।

विभिन्न कृषि संस्थानों द्वारा भी स्टाल लगाए गए। संस्थान की ओर से किसानों की मिट्टी व पानी की जांच निशुल्क की गई। इस दौरान स्कूली बच्चों ने भी भ्रमण कर कृषि संबंधी जानकारी हासिल की। किसानों को संस्थान की ओर से गेहूँ का बीज भी उपलब्ध करवाया गया। मेले में पानीपत के मतलौडा के प्रगतिशील किसान सतबीर सिंह, नैन गांव के देवी दिव, सोनीपत के

जगसी से रामकुमार, रामेश्वर व टेक राम, बीड़ नारायण के किसान हरप्रीत सिंह, भांवरहेड़ी से सुरेंद्र कुमार, कैथल के गांव दुलैन से हरबिंद सिंह, पटियाला पंजाब से लखबीर सिंह व सोनीपत के संजय सेठी को पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन डा. एसके कामरा ने किया। इस मौके पर प्रधान वैज्ञानिक राम शंकर त्रिपाठी व जनसंपर्क अधिकारी एसके शर्मा भी मौजूद रहे।